मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 54 अंक 9 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
सितम्बर 2018 बहाई वर्ष : 175

विश्व न्याय मन्दिर

मानवता के क्षितिज पर उभरती नयी विश्व सभ्यता को अवश्य ही भौतिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं के मध्य गत्यात्मक सामंजस्यता प्राप्त कर लेनी चाहिए जो कि बहाई शिक्षाओं का मूल है। स्पष्ट रूप से इस आदर्श का बहाईयों द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों, चाहे उनकी पहुँच अथवा प्रभाव क्षेत्र कैसा भी हो, की प्रकृति पर गहरा प्रभाव होता है।

–रिजवान 2010

विश्व न्याय मन्दिर के सदस्य का राष्ट्रीय कार्यालय में भ्रमण

विश्व न्याय मन्दिर के सदस्य श्री शाहरियार रज़ावी ने दिल्ली स्थित राष्ट्रीय कार्यालय का 2 अगस्त 2018 को भ्रमण किया। इस भ्रमण में उनके साथ उनकी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। राष्ट्रीय कार्यालय में कार्यरत सभी मित्रों को श्री रज़ावी से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। श्री रज़ावी और उनके परिवार का राष्ट्रीय महासचिव महोदया के साथ–साथ सभी ने गर्मजोशी से स्वागत किया। बैठक की शुरूआत में कार्यालय में कार्यरत सभी मित्रों ने अपना–अपना परिचय देते हुए अपने कार्य के बारे में संक्षिप्त में बताया।

श्री शाहरियार रज़ावी ने अपने वक्तव्य में सभी मित्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत में यह उनका आठवाँ भ्रमण है, परन्तु राष्ट्रीय कार्यालय में कार्यरत मित्रों से भेंट करने का पहला अवसर है। उन्होंने यहाँ के लोगों के बारे में एक उदाहरण देते हुए कहा कि उन्हें लगता है कि जैसे कोई कलाई घड़ी होती है उसमें कई प्रकार के उपकरण होते हैं कोई छोटा, कोई बड़ा परन्तु सबका अपना–अपना काम और अपना–अपना महत्व होता है, यदि कोई छोटा–सा भी उपकरण खराब हो जाये तो पूरी घड़ी कार्य करना बंद कर देती है, इसी प्रकार राष्ट्रीय कार्यालय में सब के कार्य अलग–अलग होने के बावजूद सभी का कार्य महत्वपूर्ण है। दोनों में अंतर यह है कि घड़ी निर्जीव है और कार्यालय के मित्रगण सजीव हैं, जो निरंतर अपने आस–पास के वातावरण तथा अन्य लोगों से सीखते हैं और प्रगति करते हैं।



श्री शाहरियार रज़ावी तथा उनका परिवार राष्ट्रीय महासचिव और राष्ट्रीय कार्यालय में सेवारत मित्रगणों के साथ

भारत में चल रहीं बहाई गतिविधियों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया के बहाई समुदाय की निगाहें भारत पर लगी रहती हैं, वे भारत को देखता है और उससे प्रेरित होकर सीखने को तत्पर रहता है।

अंत में राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की ओर से दिये गये प्रीतिभोज का सभी ने मिलकर आनंद लिया।

इस अंक में

जमशेदपुर में रूही पुस्तक–10 का अध्ययन

जमशेदपुर स्थित बहाई केंद्र में 3 से 6 अगस्त 2018 तक चार दिवसीय रूही पुस्तक–10 की दूसरी ईकाई (परामर्श) का आयोजन प्रशिक्षण संस्थान मण्डल, झारखण्ड द्वारा किया गया, जो आध्यात्मिक वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस अभियान में बंगाल के सहायक मंडल सदस्य श्री श्यामल महतो ने सह–शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दीं। अभियान में 4 क्लस्टरों से कुल 22 मित्र शामिल हुए जिसमें परिषद् के सदस्य, प्रशिक्षण संस्थान के सदस्य, सहायक मंडल सदस्य, क्लस्टर एवं राज्य स्तरीय संयोजक, क्लस्टर विकास सहयोगी एवं समिति के सदस्य, स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यगण शामिल थे। प्रत्येक दिन अध्ययन का शुभारंभ सुमधुर प्रार्थनाओं एवं निगूढ़ वचन के अंशों के अध्ययन के साथ किया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य था–बहाई परामर्शों एवं बाहरी परामर्शों के अन्तरों को समझना, आध्यात्मिक एवं भौतिक परामर्श की प्रकृति, वास्तविक परामर्श के आवश्यक तत्व, पवित्र लेखों के अनुसार आध्यात्मिक परामर्श की प्रकृति एवं महत्व। अध्ययन के उपरांत मित्रों ने बहाउल्लाह, अब्दुल–बहा, शोगी–एफेन्दी, विश्व न्याय मंदिर के अंशों एवं उद्धरणों को आत्मसात करते हुए समझा की एक आध्यात्मिक परामर्श की स्थिति प्रार्थना एवं अनुनय की भांति, हर प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर, ईश्वरीय लेखों के अनुरूप विचारों की रुपरेखा के साथ, एक–दूसरे के साथ मित्रता एवं सौहार्द के साथ शामिल होनी चाहिए, क्योंकि इससे आपसी प्रेम, एकता, भाईचारे, एवं सभी सदस्यों का दृष्टिकोण एक सामूहिक लक्ष्य पर केंद्रित होता है। परामर्श के दौरान हमें स्पष्टवादी, खुले विचारों का एवं पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सम्मलित होना चाहिये, क्योंकि इस प्रकार की सभाओं में अब्दुल–बहा स्वयं हमारे साथ उपस्थित होते हैं। इस प्रकार की सभाओं से शत्रु मित्रों में, अजनबी परिचितों में बदल जाते हैं। वास्तव में इस पुस्तक के अध्ययन के उपरांत मित्रों ने साझा किया कि परामर्श के प्रति पूर्व में जो धारणा थी वह इस पुस्तक के अध्ययन के उपरांत और स्पष्ट हो गयी है तथा इन सीखों का सकारात्मक प्रभाव एवं उपयोग तब ही सफल हो पायेगा जब तक हम इन सीखों का उपयोग कार्यों, व्यवहारों, विचारों में नहीं लाते, तब तक यह विचार कोरी कल्पनाओं के तुल्य ही है।



रूही पुस्तक–10 ईकाई दो का अध्ययन करने वाले प्रतिभागी

गोलमेज बैठक में मीडिया और धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि

भारतीय जन संचार संस्थान और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के जन–सम्पर्क कार्यालय के संयुक्त प्रयास से दिल्ली में 7 जुलाई 2018 को आयोजित एक गोलमेज बैठक में जन संचार संस्थान के महानिदेशक के. जी. सुरेश ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि आम तौर पर मीडिया पाठकों अथवा दर्शकों के सामने धर्म का एक निगेटिव चित्र प्रस्तुत करता है। उन्होंने कहा कि मीडिया को धर्म की सच्ची प्रकृति की समझ होनी चाहिये ताकि धर्म के नाम पर किसी प्रकार की आपसी रंजिश न निकाली जाये। उन्होंने कहा, "धर्म से सम्बन्धित समाचार का प्रकाशन अथवा प्रसारण पूरी संवेदनशीलता और उनके परिणामों के प्रभाव को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिये।" श्री सुरेश ने इस बात पर बल दिया कि धर्म को ढोंगी बाबाओं से जोड़ कर नहीं देखा जाना चाहिये। ये तथाकथित धर्माचार्य लोगों को गुमराह करते हैं, उनका शोषण करते हैं और आपराधिक मामलों को बढ़ावा देते हैं। उन्हें सामंजस्यपूर्ण वातावरण बनाना चाहिये और प्रेमपूर्ण सहअस्तित्व की बातें अपने अनुयायियों को कहनी चाहिये।"

भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के जन–सम्पर्क प्रभाग की निदेशिका नीलाक्षी राजखोवा ने कहा कि "मीडिया को धर्म के मर्म और उद्देश्य को समझना चाहिये। सच्चा धर्म लोगों के दिलों को जोड़ता है और सामाजिक सामंजस्य में योगदान देता है।"

ज्ञातव्य है कि इस गोलमेज बैठक में सुपरिचित पत्रकार और विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि उपस्थित हुये। 'पायनियर' के सम्पादक डा. चन्दन मित्रा ने कहा कि आज समाज के लिये यह ज़रूरी है कि वह परिपक्वता की एक ऐसी अवस्था को प्राप्त कर ले जब धर्मान्धता को वह नकार सकने की क्षमता रख सके, पूर्वाग्रह और अंधविश्वास को पहचान सके और परस्पर सहयोग तथा एक–दूसरे के कल्याण की भावना से प्रेरित हो सके। "यह एक लम्बी प्रक्रिया है", उन्होंने कहा, "और लोकमत को दिशा देने में मीडिया एक महत्वपूर्ण पहल कर सकता है। इस प्रक्रिया से धर्म को अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि धर्म मूल्यों और नैतिकता का साधन है।"

अन्य पत्रकारों में 'टाइम्स ऑफ इंडिया' की डा. मोना मेहता, श्री एन. के. सिंह और श्रीमती संध्या जैन शामिल थे, जिन्होंने धर्म और मीडिया के परस्पर सम्बन्धों पर प्रकाश डाला और कहा कि दोनों समाज को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निबाहते हैं।



मीडिया और धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि बैठक में चर्चा करते हुए

मणिपुर और मिजोरम में आयोजित समीक्षा बैठकों की झलक

• लंगाथेल और पंगानतबी में समीक्षा बैठकों का आयोजन 8 जुलाई को किया गया, जिनमें सात क्लस्टर से कोई 47 मित्र उपस्थित हुये। इनमें स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्य भी शामिल थे।

इन बैठकों में सबसे पहले रिज़वान 2018 संदेश के कुछ गद्यांशों का पाठ किया गया और मुख्य बिन्दुओं पर विचार–विमर्श हुआ। साथ ही बहाई कोष में दान देने के महत्व और फल की विस्तार से चर्चा की गई।

बाब के जन्म की दो सौवीं वर्षगांठ की तैयारियों की शुरूआत इन समीक्षा बैठकों से ही हुई, जिसके पहले चरण में यह निश्चित किया गया कि बहाउल्लाह की जन्म जयंती के सिलसिले में जिन प्रमुख व्यक्तियों से सम्पर्क किया गया था उनके सम्पर्क में फिर आया जाये और उनकी प्रतिक्रिया जानी जाये और उन्हें अवश्य ही बाब की दो सौवीं जन्मजयंती की सूचना दे दी जाये ताकि जब विधिवत उन्हें निमंत्रण पत्र देने जाया जाये तो एक तारतम्य बना रहे।

समीक्षा बैठक में यह भी तय किया गया कि रूही पुस्तक 4 का रिफ्रेशर कोर्स चलाया जाये ताकि जब हम लोगों से बाब और बहाउल्लाह के सम्बन्ध में बातें करें तो हमारी प्रस्तुति बिल्कुल सही और सटीक हो सके।

जब कोष पर चर्चा चली तो सब ने यह स्वीकारा कि "प्रभुधर्म के इस जीवनरक्त" का प्रवाह निरन्तर बनाये रखना है ताकि हमारा आध्यात्मिक स्वास्थ्य ठीक–ठाक रह सके। इस प्रवाह को बनाये रखने में कोषाध्यक्ष की भूमिका महत्वपूर्ण है। समीक्षा बैठक में शामिल सभी मित्रों ने संकल्प लिया कि वे कोष में दान देने के महत्व को अपने–अपने क्लस्टर में और अधिक शक्तिशाली ढंग से उजागर करेंगे।

• इम्फाल की समीक्षा बैठक पहली जुलाई को हुई, जिसमें पहले रूही पुस्तक–2 के अंशों का पाठ और उन पढ़े गये अंशों पर विचार–विमर्श किया गया। प्रतिभागियों ने लोगों के घरों में जा कर उनसे प्रभुधर्म के सम्बन्ध में

शेष पृष्ठ 4 पर



पंगानतबी में आयोजित समीक्षा बैठक में अध्ययन करते हुए

बिहार में कोष संवर्द्धन पर कार्यशाला

राज्य बहाई परिषद्, बिहार के तत्त्वावधान में 11 और 12 अगस्त, 2018 को बहाई भवन पटना में बहाई कोष संवर्द्धन हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें बिहारशरीफ़, खगड़िया, अलौली, पटना, फतुहा, पुनपुन, शाहपुर पटोरी एवं बेगूसराय से कुल 15 कोषाध्यक्ष के सहायकों ने भाग लिया। उपस्थित मित्रों को बहाई कोष के संदर्भ में शिक्षित करने के लिए बहाई कोष पर तैयार अध्ययन सामग्री तथा *'मार्गदर्शन की किरणें'* से चयनित अंशों का अध्ययन किया गया। साथ ही बहाई कोष पर गहन विमर्श किया गया।

कार्यशाला के दौरान मित्रों ने स्वयं तथा अपने पड़ोसी समुदाय–समूह में कोष के बारे में मित्रों को शिक्षित करने तथा कोष संग्रह हेतु योजनाएँ विनिर्मित की। मित्रों द्वारा प्रदत्त संकल्प–पत्र से परिषद् को ज्ञात हुआ कि पटना क्लस्टर से 10,000/– ख़गड़िया से 6400/–, फतुहा से 3000/–, बिहारशरीफ़ से 2800/–, अलौली से 2700/–, पुनपुन से 2000/–, शाहपुर पटोरी से 1700/–, बेगूसराय से 1200/– तथा राजगीर से 500/– अर्थात कुल 30,300/– रुपये प्रतिमाह राष्ट्रीय कोष में संग्रह किया जायेगा। इसी कड़ी में बताते चलें कि बैठक में उपस्थित परिषद कोषाध्यक्ष ने भी दान संग्रह हेतु कोष यात्रा की योजना बनाई। विदित हो कि कोषाध्यक्ष परिषद के कुछ सदस्यों के साथ कोष यात्रा पर निकलेंगे। इस अवसर पर सहायक मंडल सदस्य, परिषद सचिव, परिषद् सदस्य एवं राज्य सांख्यिकी पदाधिकारी उपस्थित थे, जिन्होंने नियमित रूप से दान देने, दान देने का विशेषाधिकार, उसकी अनुकंपा तथा दान के महत्व पर विशेषीकृत रूप से प्रकाश डाला।



कोष संवर्द्धन पर बिहार में आयोजित कार्यशाला के प्रतिभागी

असम में युवा सशक्तिकरण शिविर का आयोजन

असम, नागालैण्ड, अरूणाचल प्रदेश और मेघालय के कोई एक सौ दस युवा 23 जुलाई 2018 को रंग–बिरंगी पोशाकों में अपनी संस्कृति की छटा बिखेरते एक कार्यक्रम में शामिल हुये जो अपने–आप में अनूठा था। विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के युवा बहाउल्लाह के प्रति सेवा–भाव से प्रोत्साहित थे और इस बात के प्रति आश्वस्त दिख रहे थे कि समाज को बदलने की ताकत उनमें है और यही कारण है कि पूरे चार साथ चार सहायक मंडल सदस्य, परिषद के सात सदस्य और प्रशिक्षण संस्थान के सभी सदस्य उपस्थित थे जिस कारण पूरा–का–पूरा कार्यक्रम गरिमामय बन गया। कार्यक्रम के अर्थपूर्ण होने में आध्यात्मिक रूप से मनोहारी भक्तिमय कार्यक्रमों का भी बहुत योगदान रहा। जब परामर्श के पल आये तो वातावरण गम्भीर हो उठा और एक–से–बढ़कर एक सुझावों की झड़ी लग गई। जब मनोरंजन का वक्त आया तो उत्तर–पूर्व राज्यों



समूहों में अध्ययन करते हुए युवा

दिनों तक इस विषय से सम्बन्धित पुस्तकों का अध्ययन किया, परामर्श में हिस्सा लिया, अपने सुझाव दिये और चिन्तन करते रहे। वे लगातार इस बात को समझने की कोशिश करते रहे कि एक सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने का महत्व क्या है और किस प्रकार भौतिक और आध्यात्मिक रूप से समाज को उन्नत किया जा सकता है। उनके की पूरी छटा बिखर गई, रंग–बिरंगे परिधानों में नृत्य अत्यन्त मनोहारी थे।

जब सम्बन्धित सामग्रियों और पुस्तकों को पढ़ने का समय आया तब अंग्रेजी, असमिया और बोड़ो भाषा–भाषी लोगों के अलग–अलग ग्रुप बनाये गये और युवावस्था के समय से सम्बन्धित युवा सम्मेलनों में अक्सर पढ़ी जाने वाली सामग्री



असम में आयोजित युवा आध्यात्मिक शिविर के प्रतिभागी

बहुमूल्य सुझाव नोट किये गये, उन सुझावों पर उन्होंने सेवा–योजना बनाई और एक–दूसरे के करीब आये।

इस कार्यक्रम में महाद्वीपीय सलाहकार राजन सावंत और उनके के अलावा श्रेष्ठता से सम्बन्धित निर्धारित पुस्तक का अध्ययन किया गया, जिससे भौतिक और आध्यात्मिक विकास की राहें स्पष्ट हो सकीं। पुस्तक के अलावा

शेष →

देवलाली में सामाजिक कार्य पर सेमिनार का आयोजन

महाराष्ट्र के देवलाली में 3 से 5 अगस्त को सामाजिक कार्य का सेमीनार आयोजित किया गया, जिसमें 65 से अधिक मित्रों ने प्रतिभागिता दर्ज की। कार्यक्रम में सलाहाकार महोदय से मार्गदर्शन मिला, जिसमें 9 समुदायों की वास्तविकता को देखा और उन समुदायों के 100 से अधिक इलाकों को देखा।

सेमीनार के पहले और दूसरे दिन गृहभ्रमण की योजना थी, जिसमें चारों दिशाओं में गूँज रही थी।

मालेगांव के मित्रों ने वार्तालाप में संस्थान प्रक्रिया पर चर्चा की। दूसरे दिन के भ्रमण में समुदाय सम्मलेन में आये 29 युवाओं के साथ स्टडी सर्कल शुरू किया गया और दस प्रतिभागियों के साथ एक युवाकिशोर दल शुरू किया गया।

इसी तरह शिगावा बहुला के वाटर टैंक एरिया में सलाहकार महोदय द्वारा 15 परिवारों में रूही पुस्तक–4 के एल्बम द्वारा प्रत्यक्ष



देवलाली में आयोजित सेमिनार के प्रतिभागी

नासिक के 8 इलाके शामिल थे। पहले दिन के गृहभ्रमण में देवलाली के इलाके चारणवाडी में समुदाय सम्मलेन का आयोजन किया गया। चारणवाडी में मालेगांव के 15 मित्रों ने भ्रमण किया, जिन्होंने समुदाय सम्मलेन में हिस्सा लिया।

समुदाय सम्मलेन में चारणवाडी के 200 से अधिक मित्रों ने सहभागिता दिखाई। कार्यक्रम में मित्रों द्वारा प्रार्थनायें की गयीं जो लाऊडस्पीकर के जरिये प्रसारित की गईं प्रार्थनायें चारणवाडी की शिक्षण किया, जिसमें 15 मित्रों ने बहाउल्लाह में आपनी आस्था व्यक्त की।

दूसरे दिन के भ्रमण में सलाहकार द्वारा शिवाजीनगर के साइरत्न चौक में प्रत्यक्ष शिक्षण किया गया, जिसमें 9 मित्रों ने प्रभुधर्म को अंगीकार किया। इसी दिन साइरत्न चौक में समुदाय सम्मलेन का आयोजन किया गया, जिसमें 70 से अधिक मित्र सहभागी बने।

किताब–ए–अक़्दस से चुने गये विधान, अब्दुल–बहा के लेखों से अंश और धर्मसंरक्षक तथा विश्व न्याय मंदिर के संदेशों के अंशों का संकलन भी काफी उपयोगी सिद्ध हुआ। लोगों का ध्यान इस पर केन्द्रित रहा कि किस प्रकार संकलित अंशों को पढ़कर और उन पर विचार–विमर्श कर गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त की जाये।

ज्ञातव्य है कि इन युवाओं में अधिकांश शीघ्र वयस्कता प्राप्त कर लेंगे और तब की जिम्मेदारी सम्हालने के लिये इन्हें प्रशिक्षित करना आवश्यक है। इस आशय की चर्चा करते हुये सलाहकार राजन सावंत ने परिवारों के महत्व, परिवारों के समूह द्वारा प्रार्थना सभाओं का आयोजन और परिवारों का आर्थिक सम्बल बनने के लिये युवाओं का आह्वान किया और कहा कि अपने धर्म, अपने परिवार और अपने समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने का वक्त आ रहा है और इसके प्रति युवाओं को अधिक गम्भीरता से विचार करना चाहिये।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
New Delhi P.S.O.

Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20

बहाई विवाह



बिहार के बेगूसराय क्लस्टर के साहेबपुर कमाल समुदाय निवासी श्री कपिलदेव प्रसाद यादव के सुपुत्र श्री पंकज कुमार और खगड़िया क्लस्टर के ठाठा समुदाय निवासी श्री विवेकानन्द यादव की सुपुत्री कुमारी अंजली का विवाह 15 जुलाई, 2018 को बहाई रीति–रिवाज़ के अनुसार स्थानीय आध्यात्मिक सभा, साहेबपुर कमाल के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर परिजनों के अलावा अनेक बहाई मित्रगण भी उपस्थित थे।



बिहारशरीफ क्लस्टर के सिपाह समुदाय निवासी श्री कृष्णा प्रसाद के सुपुत्र श्री सत्यप्रकाश कुमार का विवाह निज क्लस्टर अन्तर्गत पलनी समुदाय के श्री द्वारिका प्रसाद की सुपुत्री सुश्री पूजा कुमारी के साथ 22 जून, 2018 को बहाई विधि–विधान के अनुसार स्थानीय आध्यात्मिक सभा, हरगावॉं की देख–रेख में सम्पन्न हुआ। इस मौके पर परिजनों के अलावा अनेक बहाई मित्रगण भी उपस्थित थे।

निवेदन

मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें अपने बहाई समाचारपत्र में प्रकाशित कर सकें।

धन्यवाद !

मणिपुर और मिजोरम में आयोजित समीक्षा बैठकों की झलक

पृष्ठ 2 का शेष

बातें करने और प्रार्थना सभाओं की संख्या में वृद्धि लाने की योजना बनाई। जिन लोगों के घरों में जाने की योजना बनी है वे वैसे 65 मित्र हैं जिन्होंने पिछले साल बहाउल्लाह की जयंती के समय अच्छा योगदान दिया था। साथ ही, वैसे 51 युवाओं की एक सूची बनाई गई जो पिछले साल जयंती समारोह में सक्रिय ले सकें।

समीक्षा बैठकों में यह उत्साह देखा गया कि समय के अभाव को समझते हुये हर एक प्रतिभागी ने प्रतिदिन प्रभुधर्म का संदेश देने की ज़रूरत महसूस की।

• खंगाबोक क्लस्टर की समीक्षा बैठक 7 जुलाई को हुई। इसमें मुख्य रूप से प्रभुधर्म का



खंगाबोक क्लस्टर में आयोजित समीक्षा बैठक में चर्चा करते हुए

रहे, लेकिन उसके बाद निष्क्रिय नहीं तो शिथिल अवश्य पड़ गये।

निश्चय किया गया कि बाब की दो सौवीं जन्म–जयंती और भी अधिक संख्या में गतिविधियों के संचालन, और अधिक लोगों को सक्रिय बनाने की कोशिश और अधिक लोगों को प्रभुधर्म से जोड़ने की प्रक्रिया को कायम रखने की एक झलक प्रस्तुत करेगी और कोशिश यह की जायेगी कि बाब की दो सौवीं जयंती का एक ऐसा सुन्दर प्रभाव हो कि एक नया समुदाय, एक नये समाज की नींव रखी जा सके। इन समीक्षा बैठकों में उन अमर शहीदों को भी याद किया गया, जिन्होंने प्रभुधर्म की आधारशिला का काम किया और प्रसन्नता के साथ अपने प्राणों की आहुति दे दी। इसी सिलसिले में रूही पुस्तक–4 के अंशों का पाठ का निर्णय लिया गया कि उन्हें पढ़कर वे अधिक तरोताज़ा महसूस कर सकें और प्रभुधर्म की राह में अपनी समर्पित सेवाओं का संकल्प संदेश देने के एक अभियान के संचालन के लिये 20 लोगों का एक दल गठित किया गया और 7 ऐसे घरों की पहचान की गई जहाँ प्रभुधर्म का संदेश लेकर मित्रगण जायेंगे और उन घरों का एक समूह बना कर प्रार्थना सभाओं को प्रोत्साहित करेंगे।

इन समीक्षा बैठकों में मूल्यांकन के बाद जो परिदृश्य उभर कर सामने आया वह यह था कि आठवें और नौवें चक्र में अधिकांश गतिविधियों को जारी नहीं रखा जा सका। इस कारण यह निश्चित किया गया कि समीक्षा बैठक के सभी प्रतिभागी, जिनमें स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के कुछ सदस्य भी शामिल थे, प्रभुधर्म का संदेश देने और लोगों के घरों में जाकर प्रभुधर्म की शिक्षाओं पर चर्चा करने पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे और अपने–अपने क्षेत्रों में चल रही गतिविधियों को कायम रखने तथा गतिविधियों की संख्या बढ़ाने की कोशिश दिल–ओ–जान से करेंगे।

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.9. 2018
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)